अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

स्वदेशी ज्ञान परम्परा एवं धारणक्षम विकास

9-10 मार्च, 2025

विज्ञान भवन, मौलाना आजाद रोड़, राजपथ के निकट,
केन्द्रीय सचिवालय, नई दिल्ली -110001

आयोजक

शैक्षिक फाउंडेशन

शिवाजी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय सिंधी भाषा संवर्धन परिषद्

प्रायोजक

शैक्षिक फाउंडेशन : परिचय

शैक्षिक फाउंडेशन भारत की सनातन चिंतन परंपरा के आलोक में शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाली एक स्वतंत्र एवं स्वायत्त संस्था है। शैक्षिक फाउंडेशन वर्ष 2012 में दिल्ली में सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट के अन्तर्गत पंजीकृत संस्थान है जो शैक्षिक सेमिनार, शैक्षिक परिचर्चा, शैक्षिक सम्मेलन, शैक्षिक-वार्ता, शैक्षिक मेले और समाज में अन्य समसामयिक गतिविधियों का आयोजन करता है। शैक्षिक फाउंडेशन की अन्य गतिविधियों में भारत की पारंपरिक ज्ञान-शक्ति की खोज और अनुसंधान, उत्कृष्ट शिक्षकों का सम्मान, भारतीय और विदेशी मूल के शिक्षकों के साथ विमर्श का आयोजन, भारत की सनातन चिंतन परंपरा को मजबूत करने के लिए प्रयास, इसके लिए जनजागरण अभियान संचालन, भारतीय शिक्षा प्रणाली की स्थापना तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए वैकल्पिक संरचना विकसित करना आदि सम्मिलित हैं। शैक्षिक फाउंडेशन वर्ष 2015 से प्रति वर्ष शैक्षिक एवं सामाजिक क्षेत्र में श्रेष्ठ तथा असाधारण कार्य करने वाले तीन शिक्षाविदों को शिक्षा-भूषण सम्मान से सम्मानित करता है।

विगत छह वर्षों में शैक्षिक फाउंडेशन ने विभिन्न विषयों पर चार अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किए हैं। इनका विवरण निम्नानुसार है –

वर्ष 2024 – वैश्विक पटल पर भारत का पुनरुत्थान, वर्ष 2020 – मानवाधिकार : राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दे और चुनौतियाँ, वर्ष 2019 – भारतीय नारी – कल, आज और कल तथा वर्ष 2018 –वसुधैव कुटुंबकम् : संपूर्ण विश्व एक परिवार।

शिवाजी कॉलेज : परिचय

शिवाजी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय का एक सह-शिक्षा कॉलेज है। इसकी स्थापना 1961 में माननीय डॉ. पंजाबराव देशमुख, केंद्रीय कृषि मंत्री, प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता और किसान-नेता द्वारा की गई थी। वर्ष 1967 में इसे दिल्ली के करमपुरा क्षेत्र में स्थानांतरित कर दिया गया। तदन्तर 1976 में इसे राजा गार्डन में स्थित वर्तमान परिसर में स्थानांतरित कर दिया गया था। कॉलेज को NAAC द्वारा ग्रेड 'ए' की मान्यता प्राप्त है। कॉलेज विज्ञान, मानविकी तथा वाणिज्य संकाय में बीस स्नातक पाठ्यक्रम संचालित करता है। बिजनेस इकोनॉमिक्स में एक स्ववित्तपोषित स्नातक पाठ्यक्रम, तीन स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और जर्मन में एक ऐड-ऑन पाठ्यक्रम संचालित किया जाता है। कॉलेज के कई वरिष्ठ संकाय सदस्य पीएच.डी. शोध पर्यवेक्षण कराते हैं। शोधार्थी दिल्ली विश्वविद्यालय के साथ पंजीकृत होते हैं। कुछ संकाय सदस्य यूजीसी वित्तपोषित बृहत् और लघु अनुसंधान परियोजनाओं पर अनुसंधान करते रहे हैं। कॉलेज के कई छात्रों ने दिल्ली विश्वविद्यालय परीक्षाओं में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। साथ ही कई विद्यार्थी प्रतिष्ठित संस्थानों में इंटर्नशिप के लिए चयनित हुए हैं।

राष्ट्रीय सिंधी भाषा संवर्धन परिषद् : परिचय

राष्ट्रीय सिंधी भाषा संवर्धन परिषद् (एनसीपीएसएल) की स्थापना सोसायटी अधिनियम के अंतर्गत उच्च शिक्षा विभाग के अधीन एक स्वायत्त पंजीकृत इकाई (1860- धारा 21) रूप में 26 मई 1994 को की गई थी। परिषद् का मुख्यालय दिल्ली में स्थित है। परिषद् का उद्देश्य सिंधी भाषा को बढ़ावा देना, विकसित करना और प्रचारित करना है। परिषद् भारत सरकार को सिंधी भाषा से जुड़े विषयों और सिंधी भाषा की शिक्षा पर परामर्श देती है। एनसीपीएसएल सिंधी भाषा में प्रकाशनों के लिए वित्तीय सहायता के साथ इसके लिए पुरस्कार देती है। इसके अतिरिक्त परिषद सिंधी भाषा सीखने के पाठ्यक्रमों को प्रोत्साहन देने के कार्य में संलग्न है।

एबीआरएसएम : परिचय

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ (एबीआरएसएम) का उद्देश्य शिक्षा और समाज के क्षेत्र में सांस्कृतिक राष्ट्रभाव की विचारधारा का प्रसार करना है। महासंघ शिक्षकों के वेतन, भत्ते, सेवा शर्तों एवं अन्य सुविधाओं सहित उनके हितों की रक्षा के साथ-साथ राष्ट्रीय उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सामाजिक सरोकार एवं शैक्षणिक उन्नयन के कार्यक्रमों की योजना बनाने एवं क्रियान्वित करने वाली गतिविधियों का संचालन करता है। एबीआरएसएम प्री-प्राइमरी से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक राष्ट्रभाव और भारतीय दर्शन की भावना से ओतप्रोत शिक्षकों का संगठन है। इसकी स्थापना 1988 में की गई थी। महासंघ एक देशव्यापी संगठन है जिसकी वर्तमान में 51 राज्य स्तरीय इकाइयाँ और 200 से अधिक विश्वविद्यालय स्तर की इकाइयों के साथ देश के 27 राज्यों तक इसका विस्तार है।

सम्मेलन संकल्पना

पश्चिमी विश्व में विकसित वैज्ञानिक अनुसंधानों के व्यष्टिपरक दृष्टिकोण ने साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षाओं को जन्म दिया है। यह व्यष्टिपरक दृष्टि पूर्व के विश्व के समग्र दृष्टिकोण से बिल्कुल भिन्न है। इस व्यष्टिपरक एवं अपचयवादी दृष्टिकोण युक्त विज्ञान ने उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में यूरोपीय देशों में बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण को जन्म दिया। इसे औद्योगिक क्रांति कहा गया। इसका एक उप-उत्पाद प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण व निर्दयतापूर्वक दोहन के रूप में प्रकट हुआ। संसाधन दोहन की इस प्रक्रिया के दौरान प्रकृति संसाधन आपूर्ति की सीमित क्षमता को ध्यान में नहीं रखा गया।

प्राकृतिक संसाधनों के इस अविवेकपूर्ण दोहन व औपनिवेशिक शोषण का मानव जीवन व पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में पश्चिम की दुनिया को यह ध्यान आया कि यह विकास प्रक्रिया मानव जीवन एवं पर्यावरण के लिए धारणक्षम नहीं है। इसलिए पहली बार 1972 में संयुक्त राष्ट्र में इन दुष्परिणामों की चर्चा करते हुए धारणक्षम विकास की एक विवेकपूर्ण रणनीति तैयार करने के लिए विचार-विमर्श शुरू किया गया। वर्ष 1992 में विकास के धारणक्षण प्रारूप की रूपरेखा तैयार की गई और 2015 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने सत्रह स्पष्ट धारणक्षम लक्ष्यों (SDGs) को स्वीकृति दी। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए वर्ष 2030 की सीमा तय की गई। वर्ष 2016 से संयुक्त राष्ट्र संघ सदस्य देशों को इन एसडीजी लक्ष्यों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करने का प्रयास कर रहा है।

प्राचीन काल से ही पूर्वी दुनिया का दृष्टिकोण 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' में विश्वास का रहा है। (पृथ्वी मेरी माता है और मैं उसकी संतान हूँ।) (अथर्ववेद 12.1.12.)। प्रसिद्ध आर्थिक इतिहासकार एंगस मैडिसन ने अपनी पुस्तक 'द वर्ल्ड इकोनॉमी : ए मिलेनियल पर्सपेक्टिव' में लिखा है कि भारत ने 1820 ई. तक विश्व अर्थव्यवस्था में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। यह भू-भाग विश्व अर्थव्यवस्था का प्रमुख संचालक रहा जबकि आश्चर्यजनक रूप से उस अवधि में मानव जीवन के समक्ष पर्यावरणीय चिंता और जलवायु संकटों का कोई उल्लेख एवं उदाहरण नहीं है।

इस आर्थिक विकास की रणनीति का आधार ऐसी स्व आधारित परंपरा को जाता है जिसमें मानव के प्रकृति के साथ एकात्मभाव को मूल में रखा गया था। इस दृष्टिकोण में संपूर्ण ब्रह्मांड को एक इकाई के रूप में माना गया जिसमें प्रत्येक छोटी इकाई ब्रह्मांड से शक्ति और ऊर्जा प्राप्त करती है व उसी की अभिव्यक्ति है।

पृथ्वी और इससे भिन्न ब्रह्मांड में स्थित प्रत्येक वस्तु पर ईश्वर का स्वामित्व माना गया। इस पवित्र दृष्टि ने ही प्रकृति को शोषण से बचाया। पेड़-पौधों, पहाड़ों, जमीनों, तालाबों, हवा, वर्षा, सूरज, नदियों और समुद्रों के प्रति आभार व्यक्त करना हमारी जीवन शैली के रूप में विकसित हुआ। इस तरह की जीवन शैली जानबूझकर या अन्यथा धरती माता की रक्षा में प्रकृति के योगदान को दोहराती रही और इस तरह हमारे अस्तित्व को सुनिश्चित करती रही। प्राचीन स्वदेशी पद्धति में गतिविधियाँ समुदाय आधारित थीं जिनके मूल में सभी के कल्याण के लिए सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना निहित थी। विकास के पश्चिमी मॉडल ने व्यक्ति केंद्रित सामाजिक जुड़ाव को प्रोत्साहित किया जिसके कारण यंत्र मानवीय संबंधों से अधिक प्रासंगिक हो गए। परिणामतः भौतिकतावादी प्रतिमान मानव कल्याण से अधिक महत्त्वपूर्ण हो गए है और विशेषाधिकारों को सीमित समूहों और समुदायों तक सीमित कर दिया।

'स्वदेशी ज्ञान परम्परा और धारणक्षम विकास' पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का उद्देश्य धारणक्षम जीवन के लिए समकालीन विश्व में स्वदेशी धारणक्षम पद्धतियों की प्रासंगिकता पर ध्यान आकर्षित करना है। साथ ही एक ऐसा मंच प्रदान करना है जो विकास के साथ धारणक्षम पद्धतियों को बढ़ावा देने में स्वदेशी ज्ञान के महत्त्व को प्रस्तुत करने और उस पर विचार-विमर्श करने के लिए शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, पेशेवरों और नीति निर्माताओं को एक साथ लाने का प्रयास करेगा।

सम्मेलन का उद्देश्य सांस्कृतिक संरक्षण और प्राचीन समुदाय-आधारित विकास रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए पारंपरिक और स्वदेशी ज्ञान का उपयोग करके धारणक्षम विकास के अभाव से संबंधित समस्याओं और उनके समाधान पर विमर्श करना है।

शोध-पत्र आमंत्रण

शोध-पत्र और लेख व्यापक विषय और उप-विषयों पर आमंत्रित किए जाते हैं लेकिन केवल इन्हीं तक सीमित नहीं हैं। आलेख का प्रेषण माइक्रोसॉफ्ट वर्ड में सॉफ्ट कॉपी में अपेक्षित है। इसका विशिष्ट प्रारूप (फॉन्ट : इंग्लिश-टाइम्स न्यू रोमन और हिंदी देवलीस 010, यूनिकोड) (आकार और लाइन स्पेसिंग 1.5) है। सम्मेलन में प्रस्तुतीकरण के लिए शोध-सार/ शोध-पत्र sfintconference@gmail.com पर मेल किया जाना अपेक्षित है।

शोध-सार प्रस्तुत करने की अंतिम दिनांक :
07 फरवरी, 2025

शोध-सार की स्वीकृति दिनांक :
10 फरवरी, 2025

पूर्ण शोध-पत्र प्रेषण करने की अंतिम दिनांक :
15 फरवरी, 2025

आयोजन स्थल

आयोजन स्थल – **विज्ञान भवन, मौलाना आजाद रोड़, राजपथ के निकट, केंद्रीय सचिवालय, नई दिल्ली – 110011**

विज्ञान भवन भारत सरकार का एक प्रमुख आयोजन सुविधा केंद्र है जो ऐतिहासिक और राजनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण शिखर सम्मेलनों, संगोष्ठियों और सम्मेलनों का स्थल रहा है। यह 1956 में बना है तथा अति आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है। यह दिल्ली के केंद्र में स्थित है और सड़क/रेलवे/मेट्रो नेटवर्क से बहुत अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। आयोजन स्थल के निकटतम मेट्रो स्टेशन वायलेट लाइन पर खान मार्केट तथा येलो लाइन उद्योग भवन है। यह नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से 5 किमी की दूरी पर और IGI हवाई अड्डे से लगभग 15 किमी की दूरी पर सुविधाजनक रूप से स्थित है। यह शिवाजी स्टेडियम मेट्रो स्टेशन से 3.5 किमी की दूरी पर स्थित है, जो IGI हवाई अड्डे से एक सीधे मेट्रो से जुड़ी है।

पंजीयन

भारतीय नागरिकों के लिए पंजीकरण शुल्क रु. 2000/-, विदेशी प्रतिभागियों के लिए पंजीकरण शुल्क $ 30/- है। पंजीकरण शुल्क का भुगतान ऑनलाइन किया जा सकता है।

बैंक का नाम
भारतीय स्टेट बैंक
खाते का नाम
''शैक्षिक फाउण्डेशन''
शाखा का पता-गोकुलपुरी शाखा, दिल्ली
खाता संख्या – **32998945326**
आईएफएससी कोड : **SBIN0004844**

पंजीकरण शुल्क जमा करने के बाद, कृपया पंजीकरण फॉर्म में पंजीकरण शुल्क जमा के प्रमाण की पीडीएफ प्रति अपलोड करें।

कृपया अपना पंजीकरण पूरा करने के लिए निम्नलिखित गूगल लिंक का उपयोग करें –
https://forms.gle/taNBakGsKesCFZn86

निम्नलिखित उप-विषयों और संबंधित क्षेत्रों पर शोध-पत्र आमंत्रित हैं :

- स्वदेशी लोग, विशिष्ट एवं अद्वितीय संस्कृतियाँ, परंपराएँ और उनका वैश्विक दृष्टिकोण
- आत्मनिर्भरता और स्वदेशी समुदाय
- पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ और एक हरित विश्व
- नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा सुरक्षा
- वैश्विक खतरों का निराकरण
- मूल भाषाएँ (जैसे संस्कृत, तमिल, तेलुगु, सिंधी, पंजाबी आदि) और भाषाई व्यवहार
- सतत संसाधन प्रबंधन और समुदाय आधारित दृष्टिकोण
- स्थानीय शिक्षा प्रणालियाँ और समकालीन विश्व में उनकी प्रासंगिकता
- समाजों के स्वदेशी ज्ञान में विज्ञान की दुनिया
- पारंपरिक समाजों में संस्थाएँ, कानून और शासन
- परंपरागत जीवन पद्धति में प्रकृति के साथ मानव का संबंध
- आधुनिकता और समाज पर इसका प्रभाव
- धारणक्षम कृषि और स्वदेशी कृषि पद्धतियाँ
- जलवायु परिवर्तन की चिंताओं को दूर करने के परंपरागत तरीके
- सांस्कृतिक विरासत और धारणक्षम जीवन
- धारणक्षम विकास के लिए स्वदेशी समाज में महिलाओं की भूमिका और भागीदारी
- स्वदेशी जीवन पद्धति और धारणक्षम विकास लक्ष्य
- स्वास्थ्य देखभाल में परंपरागत औषधीय अभ्यास
- पारंपरिक आर्थिक प्रणालियाँ और धारणक्षम आजीविका
- परंपरागत समाजों में खाद्य सुरक्षा
- परंपरागत समाजों में सामाजिक संस्थाएँ और समावेशिता
- स्वदेशी वास्तुशिल्प ज्ञान और पर्यावरण अनुकूल संरचनाएँ
- शहर और शहरी नियोजन का परंपरागत ज्ञान और उनकी सुस्थिरता
- धारणक्षम समाजों के निर्माण में विविधता की भूमिका
- विवेकशील उपभोग और उत्पादन की पारंपरिक दृष्टि
- स्वदेशी समाज में प्रचलित परंपरागत कार्य पद्धतियों में समानता
- पर्यटन, कृषि और इसी तरह के प्रयासों के माध्यम से समृद्धि प्राप्त करने की हरित पद्धतियाँ
- भूमि, जल और वायु के माध्यम से परिवहन में धारणक्षम प्रणाली के पारंपरिक तरीके
- पर्यावरण संबंधी चिंताओं का सम्मान करने वाली परंपरागत खेल गतिविधियाँ

संरक्षक

प्रो. नारायण लाल गुप्ता, अध्यक्ष, ए.बी.आर.एस.एम.
प्रो. योगेश सिंह, कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय
प्रो. शांतिश्री डी. पंडित, कुलपति, जवाहरलाल नेहरू विश्विद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. शशिकला वंजारी, कुलपति, एन आई ई पी ए, नई दिल्ली
प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल, कुलपति, गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़
प्रो. टंकेश्वर, कुलपति, केंद्रीय विश्वविद्यालय हरियाणा
प्रो. अशोक कुमार नागावत, कुलपति, दिल्ली कौशल एवं उद्यमिता विश्वविद्यालय
प्रो. नागेश्वर राव, पूर्व कुलपति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
प्रो. कुलदीप अग्निहोत्री, पूर्व कुलपति, केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश
प्रो. आर. के. मित्तल, पूर्व कुलपति, सी.बी.एल.यू.
प्रो. जे.पी.सिंघल, पूर्व कुलपति राजस्थान विश्वविद्यालय एवं पूर्व अध्यक्ष ए.बी.आर.एस.एम.
श्री महेंद्र कपूर, संगठन मंत्री, ए.बी.आर.एस.एम.
श्री जी लक्ष्मण, सह संगठन मंत्री, ए.बी.आर.एस.एम.

संयोजक

प्रो. वीरेंद्र भारद्वाज
प्राचार्य, शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्विद्यालय
9810265936

सह-संयोजक

प्रो. मनोज सिन्हा
प्राचार्य, आर्यभट्ट कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
9868877699

प्रो.गीता भट्ट, निदेशक
नॉन कॉलेजिएट, महिला शिक्षा बोर्ड, दिल्ली विश्वविद्यालय
9810897367

परामर्श मंडल

प्रो. सुषमा यादव
प्रो. बलराम पाणी
प्रो.श्री प्रकाश सिंह
प्रो. ए के भागी
प्रो. रमा
प्रो. राज भारद्वाज
प्रो. प्रवीण गर्ग
प्रो. एच सी जैन
प्रो. नरेंद्र सिंह
प्रो. पूनम कुमारी
श्री महेंद्र कुमार
श्री शिवानंद शिंदनकेडा
प्रो. प्रग्नेश शाह
प्रो. शैलेश कुमार मिश्रा
प्रो. कल्पना पाण्डेय
श्री संजय कमार राउत
श्री मोहन पुरोहित
डॉ. निर्मला यादव
डॉ. अलका सुरी

आयोजन समिति

प्रो. अरविंद महतो
प्रो. राकेश कुमार पांडेय
प्रो. राजेश कुमार जांगिड़
प्रो. प्रदीप खेड़कर
डॉ. संघमेश
डॉ. जसपाल वारवाल
प्रो. माधव गोविंद
प्रो. मनोज खन्ना
प्रो. राजीव अग्रवाल
प्रो. टी एस राणा
प्रो. सविता मित्तल
प्रो. वी एस नेगी
श्री वेद प्रकाश
श्री राजेश कुमार पालीवाल
श्री अजय कुमार सिंह

प्रबंधन समिति

प्रो. सुनील कश्यप
डॉ. संजय कुमार
डॉ. मनोज राणा
डॉ. नरेश कुमार
डॉ. राम सिंह
डॉ. पवन सैनी
डॉ. मेघराज मीना
डॉ. ललित कटारिया
श्री दिनेश नागर
डॉ. सुरेंद्र कुमार
डॉ. सत्येंद्र शुक्ला
डॉ. राकेश कुमार
डॉ. पवन कुमार
श्री राहुल मिश्रा
सुश्री नविता ठाकरान
सुश्री अपर्णा चौहान

SBI
Merchant Name : SHAIKSHIK FOUNDATION
UPI ID : 32998945326@sbi
BHIM UPI

पंजीयन सं. : 1240 in Book No. 4, Vol. No. 10855

SHAIKSHIK FOUNDATION
ज्ञानमूलं सर्वम्

शैक्षिक फाउंडेशन

606/13, कृष्णा गली नंबर 9, मौजपुर, दिल्ली
ई-मेल : shaikshikfoundation@gmail.com,
contact@shaikshikfoundation.org
वेबसाईट :www.shaikshikfoundation.org

सूचना के लिए संपर्क
आवास एवं परिवहन
प्रो. सुनील कश्यप : 9990842167
शोध-पत्र प्रेषण
प्रो. राजेश कुमार जांगिड़ : 9414249689
प्रो. राकेश कुमार पांडेय : 9811170889